Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No. XIX, July-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

उत्तरी भारत में तुर्की शासन :20 वीं सदी के दौरान ब्रिटिश और भारतीय इतिहास लेखन के एक आकलन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XIX,July-2015, ISSN 2230-7540

उत्तरी भारत में तुर्की शासन :20 वीं सदी के दौरान ब्रिटिश और भारतीय इतिहास लेखन के एक आकलन

Vichitra Vijay

Research Scholar, Singhania University, Rajasthan

----------X----------

परिचय:

भारतीय इतिहास में 13 वीं सदी और 20 वीं सदी के दो युगों में इतिहास लेखन के क्षेत्र में एक नई शुरुआत हुई। जिसमे 13वीं सदी में तुर्की सुल्तानों का शासन बताया गया है जो अदालत वृत्तान्त की भारत- फारसी इतिहास लेखन कार्य भारतीय इतिहास के लेखन में एक नये चरण की शुरुआत की स्थापना के लिए जाना जाता है। 20वीं सदी के वैज्ञानिक ऐतिहासिक लेखन की सुबह जो ब्रिटिश और भारतीय इतिहासकारों के प्रयासों से भारत में और विदेशों में चिह्नित है। इन लेखों के एक आकलन से नए अंतर्दृष्टि की शुरुआत हुई और पहले से ही 20वीं सदी ज्ञान इतिहासकारों के लेखन के माध्यम से प्रचारित आपूर्ति करता रहा। क्यों कि तुर्की सुल्तानों के शासन के 20वीं सदी के दौरान इतिहासकारों के ब्रिटिश और भारतीय स्कूलों में अध्ययन का एक केन्द्र बिन्दु इरादों और इन इतिहासकारों के उद्देश्य की पुष्टी कर रहे थे। इतिहास लेखन की प्रकृति को 20वीं सदी के दौरान लिखा गया था। जिसका भारत में ऐतिहासिक लेखन के भविष्य पर मजबूत प्रभाव है 13 वीं सदी दिल्ली सल्तनत के वर्षों में ही नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं के कार्यो को भी जारी करने के लिये माना जाता है जिसके कारण यह भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि में है बल्कि इसलिए भी कि आधुनिक विद्वानों की चेतना में भी थे, इस सदी के कारण ही भारत में मुस्लिम शासन की नींव स्थापित हो सकी थी। जिसके कारण इतिहास पर सीधा असर राजनीतिक संस्थाओं धर्म और उत्तरी भारत में तुर्की शासन की राजनीति के साथ तीन साहित्यिक कृतियों 20वीं सदी में दिखाई दी।

साहित्य की समीक्षा:

तुर्की शासन से ही 20वीं सदी के दौरान ब्रिटिश व भारतीय इतिहास लेखन वृद्धि हुई और उत्तरी भारत में मुस्लिम शासन के विकास और राजनीतिक शक्ति में ब्रद्धि हुई। जिसके चलते जल्दी ही तुर्की सुल्तानों ने एक साम्राज्य के रूप में जो दिल्ली सल्तनत "के साथ लगता है एक शक्ति बन चुका था और भारतीय इतिहास में जाना जाने लगा की स्थापना की थी। क्यों कि ब्रिटिश और भारतीय इतिहासकारों को जल्दी ही तुर्की शासन के इतिहास में रुचि होनी लगी उनके इरादे और उद्देश्य क्या थे कैसे इन प्रवृत्तियों और वैज्ञानिक इतिहास लेखन ब्रिटिश द्वारा शुरू लेखन की परंपरा 20वीं सदी के दौरान भारतीयों द्वारा विकसित किए गए।

तुर्की सल्तनत पर एक अन्य महत्वपूर्ण मोनोग्राफ के.ए. द्वारा लिखा गया था निजामी धर्म और राजनीति के कुछ पहलुओं को भारत में तेरहवीं शताब्दी के दौरान शीर्षक से 1961 के इतिहास में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ विभाग द्वारा प्रकाशित के.ए. के अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में से कुछ निजामी हैं : जीवन और शेख फरीदुद्दीन गंज - मैं शकर (अलीगढ़, 1955) के टाइम्स, मध्यकालीन भारतीय इतिहास और संस्कृति में अध्ययन (इलाहाबाद 1966), इतिहास और मध्यकालीन भारत के इतिहासकारों, दिल्ली, 1982), रॉयल्टी पर भारत में (दिल्ली 1997) और इलियट और भारत, खंड द्वितीय और तृतीय (नई दिल्ली 1981) के डौसन के इतिहास के लिए अनुपूरक है।

20 वीं सदी के प्रारंभ तुर्की शासन पर ब्रिटिश और भारतीय इतिहासकारों द्वारा लिखित इतिहास हमें 13 वीं सदी के दौरान मामलों के राज्य के बारे में पता करने के लिए मदद करते हैं। वे कई बार सामाजिक-राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश वर्तमान में हमारे ज्ञान को समृद्ध कराते है। इतिहास को

www.ignited.in

ब्रिटिश और भारतीय इतिहासकारों द्वारा लिखित उद्देश्यों और विभिन्न उद्देश्य को अलग-अलग सेट किया था। उत्तर भारत में तुर्की शासन पर भारतीय और ब्रिटिश इतिहासकारों के 20 वीं सदी के इतिहास लेखन पर आज तक प्रकाशित किया गया है। वर्तमान जांच इस दिशा में एक विनम्र प्रयास है। इस काम के अंत में और शुरुआत में एक शुरुआत और समापन के साथ छह अध्यायों में विभाजित है। यह 20 वीं सदी के दौरान विशेषताओं और इतिहास लेखन के क्षेत्र में विकास का पता लगाने के लिए एक प्रयास है और जल्दी तुर्की शासन की राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था, धर्म, पर ऐतिहासिक लेखन और संस्थाओं का एक आकलन है। यह प्रमुखता में लाता शाखाओं, विषयों और जिन क्षेत्रों में पर्याप्त शोध किया गया है। यह भी प्रकाश डाला गया कि अंतराल खामियों को दूर करने और क्षेत्रों को आगे अनुसंधान कार्य शुरू करने के लिये प्ररित किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

शोधकर्ताओ के मतानुसार ऐतिहासिक मानचित्रकारी एक अन्य क्षेत्र है जो 20वीं सदी के भारतीय और ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा उपेक्षित किया गया है। तुर्की शासन पर 20वीं सदी के दौरान इतिहास के पन्नों में पूर्ववर्ती मूल्यांकन भारतीय और ब्रिटिश इतिहासकारों के लेखन में कुछ निश्चित प्रवृत्तियों का संकेत दिया। इन इतिहासकारों के काम का आकलन करने में यह कहा जा सकता है कि यह विश्वसनीय है कि उनकी उम्र और सामाजिक और राजनीतिक विचारों की सीमाओं के बावजूद उनमें से ज्यादातर पश्चिमी ऐतिहासिक अवधारणाओं को आत्मसात किया था और कार्यप्रणाली समय में प्रचलित लागू किया उनमें से कुछ व्यक्तिगत सांप्रदायिक या राष्ट्रवादी पूर्वाग्रह से प्रभावित थे। दूसरी ओर वे जहाँ तक संभव प्रयास किया वैज्ञानिक दृष्टिकोण का पालन करने के लिए और एक निष्पक्षता जो किसी भी पेशेवर इतिहासकार चाहते हैं।

संदर्भ सूची:

१. अहलूवालिया एम.एस. वॉल्यूम। भाग 1 अप्रैल1981129-140) " तेरहवीं शताब्दी कृषि संबंधों के कुछ पहलुओं "।

२. अहमद अजीज भारत एडिनबर्ग में इस्लाम के एक बौद्धिक इतिहास: एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस , 1969 ।

३. अहमद अजीज भारतीय पर्यावरण चेन्नई में भारतीय संस्कृति में अध्ययन :ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1999।

४. अशरफ के.एम . जीवन और हिंदुस्तान कोलकाता के लोगों की शर्तें: 1935 नई दिल्ली :मुंशीराम मनोहर लाल प्रकाशक संस्करण, 1970।

५. अस्करी एस.एच. अमीर खुसरो एक इतिहासकार के रूप में पटना : खुदा बख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी पुनर्मुद्रण 1992।

६. भागवत हसन निजामी का ताज -उल- नई दिल्ली) इंग्लैंड ट्रांस। । :(सउद अहमद प्रकाशक 1998।

७. चट्टोपाध्याय बी डी अन्य का प्रतिनिधित्व करना संस्कृत सूत्रों का कहना है और मुसलमानों दिल्ली : मुंशीराम मनोहर लाल एंड संस, 1998।

८. चट्टोपाध्याय बी डी अर्ली मध्यकालीन भारत, नई दिल्ली का बनाना : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पुनर्मुद्रण 1997।

९. जॉन एस रजत के बिना रहने का :ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1990 : प्रारंभिक मध्यकालीन उत्तर भारत, दिल्ली की मौद्रिक इतिहास।

१०. डिग्बी साइमन और दिल्ली सल्तनत के महान चिश्ती के बीच उत्तराधिकार) "(सं। (, दिल्ली युग के माध्यम से , दिल्ली , 1986 , पृ। 63-103)।

www.ignited.in